International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 4.935
Vol.6 No.2 Nov–Dec 2018

" मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीयता "

प्रा. राजश्री कल्याणकर

कै. लक्ष्मीबाई देशमुख महिला महाविद्यालय, परली वैजनाथ

जि. बीड. महाराष्ट्र.

शोध सारांश :

राष्ट्रीयता की भावना मनुष्य की एक मानसिक अनुभूति की भावना है । देशवासियों को एकता के प्रेम और स्नेह के एक धागे में बांधने का काम यह करती है ।राष्ट्रीयता की भावना से देश विकास की ओर प्रगति की ओर अग्रेसर होता है। मनुष्य को अपने देश की संस्कृती, धर्म, अपनी सभ्यता से प्रेम और गर्व की भावना होती है। अपने देश को किसी संकट में देखकर देशवासियों के प्रति अपने सारेभेद-भाव भुलाकर राष्ट्र के प्रति प्रेम , अपनत्व एवं ममत्व की भावना जागृत होना ही राष्ट्रियता है। व्यक्ति का स्वयं अकेले का (स्वार्थ) हित भूलाकर राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के अंर्तगत निवास करने वाले सभी लोगों के प्रति प्रेम और कल्याण की भावना ठी राष्ट्रप्रेम है। राष्ट्रीयता की भावना का अत्यंत व्यापक है। उसका सम्बन्ध सिर्फ देश की जड़भूमी से न होकर उनके अंतरंगसे भी होता है।

राष्ट्रीय भावना के दो पक्षों में विभाजित किया जा सकता है ।उसका भौतिक पक्ष देश की भूमी, नागरिक, नैर्सगिक धन संपदा से प्रेम तथा दूसरा पक्ष देश की सांस्कृतिक धरोहर ,परम्परा आदि से प्रेम होता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय चेतना की भावना का प्रचार प्रसार करने में साहित्य की भूमिका महत्व की होती है। साहित्य या काव्य में साहित्यकार अपने देश के गौरन का वर्णन, देश के प्रति त्याग, बलिदान और प्रेम की भावना ,भौगोलिक सौंदर्य का वर्णन, अलग-अलग रुढि परंपराओं का वर्णन , देश का गौरवशाली इतिहास का वर्णन कर ,वर्तमान के विकास की झलक, वर्तमान समस्या से जुझते नागरिकों का वर्णन, क्षोभ एवं आक्रोश,परस्पर प्रेम एवं सहयोग, एकता आदि विविधरूप से देशवासियों के मन मे राष्ट्र के प्रति अपनत्व की भावना जागृत करता है।भारत के राष्ट्रीय भावना का विकास आधुनिककाल में ही हुआ है। अंग्रेजोंद्वारा भारत की दुर्दशाका वर्णन साहित्यकारों ने अपने साहित्यद्वारा

करने पर एकता की भावना देशवासियों में निर्माण हुई । द्विवेदीयुग में राष्ट्रीयता को शक्ति, आशाऔर विश्वास की भावना निर्माण करने का काम प्रथमतः मैथिलीशरण गुप्त ने किया है। राष्ट्रीयता का बीज भारतेन्दु जीने लगाया और गुप्तजी ने उस भावनाको विस्तृतरूप में अपने साहित्य,काव्य के माध्यम से उसे विशाल रुप फैलाया। गुप्तजी भारतीय पूर्वजों के अतित का गौरवपूर्ण वर्णन करते हैं। अपने धर्म, जाति, आदर्श, तप-त्याग पर गौरवोद्गार व्यक्त करते है।

मूल शब्द : राष्ट्रीयता, काव्य, भारत, प्रेम, देश, साहित्य, भावना , स्वाभिमान

मैथिलीशरण गुप्त संकुचित राष्ट्रीयता का समर्थन नहीं करते है। उनकी राष्ट्रीयता की संकल्पना व्यापक है। उनके 'राजा प्रजा,' 'नहुष' काव्य में व्यापक राष्ट्रीयता के दर्शन होते है। उन्होंने संकुचित मनोवृति की आलोचना की है। उन्होंने राजा- प्रजा काव्य में सिर्फ अपने देश पर ही प्रेम न कर पूरे विश्व से प्रेम की भावना होनी चाहिये इस भावना को व्यक्त किया है ---------- "हम स्वदेश पर प्यार करें तो गर्व धरा पर देश अन्ततः खर्व, सर्व है विश्व चराचर।"

मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीयता को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया है। जैसे:- देश के प्रति अनुराग की भावना, अपनी जाति के प्रति अपनत्व के भाव, अपनी भाषा से प्रेम ,आदर की भावना, भारत का स्वर्णिम अतित गुणगाण ,वर्तमान दुर्दशाके प्रति, अन्याय के प्रति क्षोभ और क्रोध का चित्रण, पराधिनता की भावना के प्रति समाज में जागरण करना, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना, ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष की भावना, क्रांतिकारी भावना तथा गतिविधियों को प्रेरित करना, समकालिन घटनाओं का अपने काव्य में चित्रण ,आंदोलन का वर्णन, स्वातंत्र्य के प्रति आशा और समाज प्रबोधन का स्वर इस तरह मैथिलीशरण गुप्त ने सोयी हुई भारतीय जनता के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए राष्ट्रीयता की भावना जगाने का काम अपने काव्य के माध्यम से किया है। गुप्तजी को अपनी मातृभूमि से अत्यधिक प्रेम है । इसका परिचय उनके काव्य में मिलता है। उन्हें अपनी मातृभूमी स्वर्ग से भी सुंदर लगती है। उनके 'नहुष' खंडकाव्य में नहुष द्वारा अपनी मातृभूमी से

अपार स्नेह 'जननी जन्मभूमीश्च स्वर्गादपि गरीयसी ' कथन को चरितार्थ कर दिखाता है। उनके अनेको खंडकाव्य जैसे किसान,सिद्धराज, रंग में भंग आदि में देशप्रेम की भावना का वर्णन हुआ है।

'किसान 'काव्य में तो कलुआ की पत्नी मरने के बाद ही क्यों न हो अस्थियों के रुप में फिजी से भारत की रज में मिलाने की अन्तिम इच्छा व्यक्त करती है। अपनी मातृभूमी से अत्यधिक प्रेम और अभिमान की भावना उसके मन में है। सिध्दराज काव्य की क्षत्राणी रानकदे को अपने देश की हर वस्तु से प्रेम है जैसे नदी के प्रपात ,तीर्थ। देश के प्रति अनुराग की भावना से ही व्यक्ती देश की जड़ भूमि को भी सजीव मूर्तिमंत रूप में देखता है। जिसके मन में अपनी मातृभूमि से प्रेम नहीं भक्ति नहीं उसके लिए देश की भूमी सिर्फ मिट्टी का ढेला है। और जिनके मन में देश के प्रति भक्ती,अनुराग है उसके लिए वह प्राणों से भी प्रिय है ईश्वर के सजीव रूप के समान है । इसका एक सशक्त उदाहरण गुप्तजी 'रंग में भंग ' खंडकाव्य में दिखाया है। हाडा कुम्भ अपनी मातृभूमी का अपमान नहीं देख सकता जिस भूमि में उसने जन्म लिया, जिसने उसका पालन- पोषण किया उसकी सेवा करना तथा उनकी रक्षा में अपने प्राणों का बलिदान भी देना पड़े तो दे देना अपना में आद्य कर्तव्य समझता है। अपनी मातृभूमी का अपमान वह सह नहीं सकता । अपने देश का नकली किला भी तोड़ते देख उसका स्वाभिमान जागृत होता है और वह कहताहै,

" तोडने दूँ क्या इसे नकली किला मैं मान के
पूजतें है भक्त क्या प्रभू मूर्ति को जड़ जान के?
भ्रान्त जन उसको भले ही जड़ कहे अज्ञान से,
देखते भगवान को धीमान उसमें ध्यान से ॥
है न कुछ चित्तौर यह, बूँदी इसे अब मानिए,
मातृभूमी पवित्र मेरी पूजनीय जानिए ।
कौन मेरे देखते फिर नष्ट कर सकता इसे ?
मृत्यु माता की जगत में सत्य हो सकती किसे ?"

मैथिलीशरण गुप्त को अपने देश पर "अभिमान है। अपने देश की स्वतंत्रता तथा गौरवशाली प्रतिकों से उन्हे प्रेम है। उनका ऐसा मानना है कि जिस व्यक्ती को अपने देश से जननी जन्मभूमि से प्रेम नहीं वह व्यक्ती मनुष्य कहलाने लायक नहीं। आजादी की लड़ाई में देश के प्रति प्रेम स्वाभिमान की भावना को जगाने का काम मैथिलीशरण गुप्त ने अपने साहित्य के माध्यम से किया है।

संदर्भ :

1. नहुष : मैथिलीशरण गुप्त
2. सिध्दराज : मैथिलीशरण गुप्त
3. राजाप्रजा : मैथिलीशरण गुप्त
4. रंग में भंग : मैथिलीशरण गुप्त
5. भारतीय साहित्य एवं राष्ट्रीयता : डॉ. पंडित बन्ने
6. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युग चेतना : डॉ. सरोज चौरसिया